Pa Togan Nengminza Sangma

The Garo Hills is predominantly inhabited by the Garos, belonging to the Tibeto-Burman race. The Garos call themselves as Achiks and the land they inhabit as the Achikland.

From time immemorial, the Garos had been living as an independent tribe in the present day Garo Hills of Meghalaya. Togan N. Sangma was born at Samanda Village of present East Garo Hills District.

When Togan was at the prime of his life, the British had already occupied major portion of Garo Hills which were created into a District by passing the Garo Hills District Act 1869. However, there were more than sixty Garo villages of the most interior parts of Garo Hills which were still independent including Togan's and his co-leader Gilsang Dalbot Sangma's villages of Samanda and Dalbot-Kalkagre respectively.

An opportune moment was created by Togan and Gilsang and other independent Nokmas who took revenge on those villages which submitted to the British Authority. Another event that followed was that a Khalasi who accompanied the British Survey Party led by Major Godwin Austen was killed in 1871 by the independent Garos. This was taken by the British as a challenge to their authority. Therefore, in order to bring order, the British Government decided to annex the entire Garo villages. Togan, Gilsang and other Nokmas vowed to offer resistance even at the risk of their lives.

In the battle of Chisobibra, the independent Garos made a wild charge on the British camp. Despite being ill-equipped, he came up with the idea of using huge shields made of plantain stems that could stop bullets from hitting the Garo warriors. He fell fighting with unmatched heroism and courage in December, 1872.

Pa Togan Sangma is immortalised at the martyr's column in Shillong, where his name is enshrined along with U Tirot Sing and U Kiang Nongbah, the gallant heroes of the Khasis and Jaintias.

To commemorate the valore and courage of this great warrior of Meghalaya, the State Government instituted, Pa Togan Sangma State Awards for the best Social Services. Also every year, 12th December, Death Anniversary of Pa Togan Sangma is celebrated as State holiday.

Department of Posts is pleased to issue Commemorative Postage Stamp on Pa Togan Sangma, the great Garo tribal leader who resorted to guerrilla tactics against the British and fought for the pride of his people.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure : Smt. Nenu Gupta

Cancellation Cachet

Text : Based on information received from the proponent
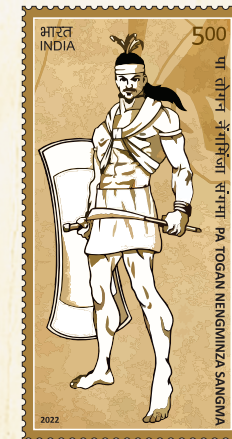
पा तोगन नेंगमिंजा संगमा

गारो पहाड़ियों पर मुख्य रूप से तिब्बती–बर्मन जाति की गारो जनजाति निवास करती है। गारो लोग खुद को अचिक कहते हैं और जिस क्षेत्र में वे निवास करते हैं, उसे अचिकलैंड कहते हैं।

गारो लोग, मेघालय के वर्तमान गारो हिल्स में एक स्वतंत्र जनजाति के रूप में अनादि काल से रहते आ रहे हैं। तोगन एन. संगमा का जन्म वर्तमान, पूर्वी गारो हिल्स जिले के समंद गांव में हुआ था।

तोगन अभी युवावस्था में ही थे, जब अंग्रेजों ने गारो हिल्स के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया और गारो हिल्स डिस्ट्रिक्ट एक्ट 1869 पारित कर उसे एक जिला घोषित कर दिया। हालांकि, गारो हिल्स के अंदरूनी हिस्सों में बसे साठ से अधिक गारो गांव ऐसे थे, जो तब भी स्वतंत्र थे। इन्हीं गांवों में तोगन और उनके साथी गिल्सांग दलबोट संगमा के गांव समंद और दलबोट–कलकग्रे भी शामिल थे।

तोगन, गिल्सांग तथा अन्य स्वतंत्र नोकमाओं ने उपयुक्त मौका देखकर उन गांवों से बदला लिया, जिन्होंने ब्रिटिश हुकूमत के आगे हथियार डाल दिए थे। इसके बाद एक और महत्वपूर्ण घटनाक्रम में, मेजर गॉडविन ऑस्टिन के नेतृत्व में ब्रिटिश सर्वे पार्टी के साथ आए एक खलासी को 1871 में स्वतंत्र गारो लोगों ने मौत के घाट उतार दिया। इस हमले को अंग्रेजों ने अपनी सत्ता के लिए चुनौती माना और अपना आधिपत्य स्थापित करने के उद्देश्य से ब्रिटिश हुकूमत ने सभी गारो गांवों को अपने साम्राज्य में मिलाने का निर्णय लिया। इस पर तोगन, गिल्सांग और अन्य नोकमाओं ने अपनी जान की परवाह न करते हुए भी इसका विरोध करने की शपथ ली।

चिसोबिब्रा की लड़ाई में, स्वतंत्र गारो लोगों ने ब्रिटिश कैम्प पर जोरदार हमला बोला। उपयुक्त हथियारों के अभाव के बावजूद, गारो योद्धाओं ने तरकीब निकाली तथा केले के तनों से विशाल ढालें बनाईं, जोकि उन्हें गोलियों से बचा सकें। दिसंबर 1872 में अद्भुत बहादुरी और साहस के साथ लड़ते हुए तोगन एन. संगमा ने वीरगति प्राप्त की।

पा तोगन संगमा का नाम शिलांग स्थित शहीद स्तंभ पर खासी और जैंतिया जनजाति के शूरवीरों, यू तिरोट सिंग और यू कियांग नोंगबाह के साथ शान से अंकित है।

मेघालय के इस महान योद्धा की वीरता और साहस के सम्मान में, राज्य सरकार ने सर्वश्रेष्ठ सामाजिक सेवाओं के लिए पा तोगन संगमा राज्य पुरस्कार की शुरूआत की है। साथ ही 12 दिसंबर को पा तोगन संगमा की पुण्यतिथि पर प्रतिवर्ष राजकीय अवकाश रखा जाता है।

डाक विभाग, गारो जनजाति के महान नायक पा तोगन संगमा पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है, जिन्होंने गुरिल्ला युद्ध करके अंग्रेजों से लोहा लिया और अपने लोगों के सम्मान के लिये युद्ध किया।

आभार :

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : श्रीमती नीनू गुप्ता
विवरणिका/विरूपण कैशे

पाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्य	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	: 304000
Stamps Printed	: 304000
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00